क्या हमारी ज़िन्दगी सिंगल-यूज़ प्लास्टिक के बिना संभव है?

हवा और पानी के बाद हमारे जीवन में सर्वव्यापी और सर्वज्ञ कुछ है तो वो प्लास्टिक ही है। अगर आपको ये गलत लग रहा है तो, चलिए-एक सुबह को याद कीजिये। सुबह उठकर ब्रश करने से लेकर नहाने के दौरान शैम्पू की बोतल, नाश्ते में टेट्रा या पॉलीथीन पैक्ड दूध की चाय, जिसे प्लास्टिक में पैक होकर आई चाय पत्ती और शक्कर डालकर उबाला गया हो। प्लास्टिक के ही लंच बॉक्स, जिसमें प्लास्टिक बैग में आये आटे से बनी चपाती, प्लास्टिक थैली में आई सब्जी, जिसमें प्लास्टिक के पाउच में आये मसालों का सम्मिश्रण वाला भोजन, जिसे पैक करके उसे एक पॉलीथीन की थैली में अच्छे से ढका गया है, ताकि सब्जी के तेल से ऑफिस बैग खराब न हो जाए..... प्लास्टिक कहाँ नहीं है !!

सरकार, संस्थाएं, टीवी- रेडियो चीख चीख कर कह दे कि ये प्लास्टिक ज़मीनी और समुद्री जीवन को तबाह कर रहा है... हम उसे स्वीकार भी करते हैं पर क्या प्लास्टिक का उपयोग करना बंद कर देते हैं ? शायद नहीं ... सवाल बहुत बड़ा है !!! प्लास्टिक ज़िन्दगी को आसान बना रहा है और आसान ज़िन्दगी किसे पसंद नहीं !!!

आज सुबह- सुबह साथियों के बीच व्हाट्सएप पर एक "पोल" डाला। प्रश्न वही था, जो इस लेख का शीर्षक है कि "क्या हमारी ज़िन्दगी सिंगल-यूज़ (केवल एक बार उपयोग के लिए) प्लास्टिक के बिना संभव है?" ६०% से ज्यादा साथियों ने कहा कि बिल्कुल संभव है, बस थोड़ी कोशिश करने की ज़रूरत है। ३५% के आस-पास साथियों ने साफगोई से कहा- नहीं, अब संभव नहीं !! *कोच्ची के एक साथी एलेक्स सी.जे.* ने कहा, शायद संभव है पर मुश्किलें बहुत बढ़ जायेगीं !!! *सिलीगुड़ी के साथी सौहार्दो*कहते है- अगर सरकार और समुदाय मिलकर "बेहतर विकल्पों" पर विचार करे तो बिल्कुल संभव है। *दिल्ली की कौशानी और श्रिया* कहती हैं कि हम महिलाओं के जीवन से जुड़े बहुत से ऐसे सिंगल-यूज़ उत्पाद है, जिनका सरल और आसान विकल्प शायद अभी तक नहीं उपलब्ध है, ऐसे में "नहीं पता" कि बिना सिंगल-यूज़ प्लास्टिक के जीवन संभव भी है ? क्या समुदाय इसके लिए अब तैयार हो भी पायेगा ? *उदयपुर के ही मेरे साथी अब्बास* बेबाकी से कहते है कि हमें आराम पसंद जीवन शैली की आदत लग चुकी है और इसे बदलने के लिए बहुत ज्यादा प्रयास मन से करने पड़ेंगे; और इसके लिए न तो युवा तैयार है और ना ही दिल से सरकार !!!

दरअसल सिंगल-यूज़ प्लास्टिक हमारी ज़िन्दगी में ठीक उस कदर घुस चुका है जैसे दुनियाभर के बाज़ारों में चाइना में बने उत्पाद!! तुलना अजीब ज़रूर है पर ज़रा देखिये, हर देश की सरकार कहती है कि चाइना के उत्पाद कम करेंगे पर सस्ते और सहजता से उपलब्ध चाइनीज उत्पादों को सरकारें अपने देश से बाहर कर नहीं पाती !!! यही कुछ हाल सिंगल-यूज़ प्लास्टिक का भी है !! ऐसा नहीं है कि सिंगल-यूज़ प्लास्टिक के कम उपयोग को लेकर प्रयास नहीं हुए। किन्तु बेहतर विकल्प उपलब्ध करवाने में हम नाकाम रहे। नतीजा वही- ढाक के तीन पात !!!

सिंगल-यूज़ प्लास्टिक से प्रकृति को कितने नुकसान है, आज इस पर बात करने की बजाय हम कोशिश करेंगे कि रोज़मर्रा की बातें करते हुए हल की दिशा में आगे बढ़ा जाए !! शायद इस से हम इस बड़ी चुनौती के छोटे छोटे स्थानीय हल खोज पाएं!! ताकि ज़िन्दगी आसान भी रहे और सिंगल-यूज़ प्लास्टिक का उपयोग भी कम हो जाए !!

क्या हो बेहतर विकल्प ?

सबसे बेहतर विकल्प तो यही है कि ऐसी वस्तुएं ज्यादा से ज्यादा उपयोग में लेने की आदत डाली जाए, जिन्हें बार बार उपयोग किया किया जा सकता है। जैसे किसी सामूहिक भोज में प्लास्टिक परत वाले कागज़ के पातळ-दोने और कागज़ या थर्मोकोल के ग्लास की बजाय स्टील के बर्तनों में भोजन परोसा जाए। माहवारी के दौरान सिंगल-यूज़ माहवारी उत्पादों की जगह ऐसे उत्पादों को भी बढ़ावा दिया जाए, जो इन्सान और प्रकृति दोनों के लिए अच्छे हो। हर बार नया

पेन या नयी रिफिल उपयोग करने की बजाय ऐसे पेन या पेन्सिल उपयोग में हो, जिन्हें बार बार उपयोग किया जा सके। टेट्रा पैक दूध, ज्यूस आदि की बजाय स्थानीय को मौका दिया जाये, जो आपको बर्तन में ये तरल उत्पाद उपलब्ध करवा सके। हर बार एक नयी पानी की बोतल खरीदने की बजाय हम अपनी बोतल घर से साथ लेकर चलें। किसी को उपहार देना है तो उसे प्लास्टिक से सजाने की बजे अन्य तरीके सोचे जाएँ।

तो क्या किया जाए ?

जितना प्लास्टिक री-साइकिल (पुनर्चक्रित) और री-यूज (पुनः उपयोग योग्य) हो सके, इस दिशा में सरकारें संजीदगी से सोचे। समुदाय भी यह तय करे कि कहाँ- कहाँ वे सिंगल यूज़ प्लास्टिक को रिफ्यूज (उपयोग से बाहर) कर सके। उदाहरण के तौर पर सरकार के सख्त कदम के बाद कई सारे रेस्टोरेंट अब प्लास्टिक की स्ट्रा के स्थान पर स्टेनलेस स्टील या कागज़ से बनी स्ट्रा ऑफर कर रहे हैं। किन्तु सभी जगह ऐसा हो गया हो, ऐसा नहीं है- ये भी एक सच है। अभी इसके लिए बहुत ज्यादा प्रयास न के बराबर हुए हैं। क़ानून तो सख्त बने है, किन्तु उनकी अनुपालना में कोताही बरती जाती है। एक बयानगी देखिये- जो सरकारें प्लास्टिक को बैन करने की बात करती है, वही अपनी योजनाओं के प्रचार-प्रसार के लिए प्लास्टिक के ही बड़े बड़े बैनर-फ्लेक्स छपवाती है!!

री-साइकिल पर हाल ही के दिनों में काफी अच्छे प्रयास किये जा रहे हैं। स्थानीय निकाय घर-घर से कचरा उठाने के साथ उन्हें पुनर्चक्रित कर रही है। इंदौर, कोच्ची, पिंपरी-चिंचवड, कोयम्बतूर, राजकोट जैसे शहरों ने इस पर कई अच्छे सकारात्मक उदाहरण भी प्रस्तुत किये हैं। इन सकारात्मक प्रयासों से बनी समझ को अन्य शहरों में कैसे विस्तार दिया जाए, इस पर भी प्रयास ज़रूरी है। पूर्वोत्तर के कई सुदुर गांवों ने अपनी स्वयं सहायता समूह (एस.एच.जी.) की महिलाओं के माध्यम से अपने इलाकों में सिंगल-यूज़ प्लास्टिक को ८०% तक आने से रोक दिया है।

जो क़ानून और नियम सिंगल-यूज़ प्लास्टिक को रोकने के लिए बनाये गए है, उन्हें प्रभावी तरीके से लागू करने के लिए कड़े फैसले लेना भी ज़रूरी है। जब तक ऐसे फैसले नहीं लिए जायेंगे, नए विकल्पों पर विचार करने की बजाय लोग आसान विकल्पों का ही चयन करेंगे।

सेवा-प्रदाताओं और कम्पनियों को भी पैकेजिंग के लिए अन्य विकल्पों पर विचार करना चाहिए, ताकि सिंगल-यूज़ प्लास्टिक को एक हद तक रोका जा सके। ये सही है कि अभी भी कई तरल और खाद्य पदार्थों के पैकेजिंग के अन्य विकल्प मौजूद नहीं है। किन्तु इन पैकेज्ड उत्पादों को फिर से अलग अलग प्रकार की पोलीथीन में पैक करने से तो बचा जा सकता है। मूल मुद्दा यही है कि सिंगल यूज़ प्लास्टिक का उपयोग कम से कम हो।

उपयोगकर्ता (कंज्यूमर), सेवा प्रदाता (सप्लायर) और नीति-निर्माता (पालिसी मेकर) ; तीनों स्तर पर सही प्रयास होना ज़रूरी है। क़ानून पहले से बने हुए हैं। अगर इनकी अनुपालना सही प्रकार से होगी तो कम्पनियां इनका उत्पादन रोकेंगी और अन्य अच्छे विकल्प तलाशेंगी। इस से उपयोगकर्ताओं को भी बेहतर विकल्प मिलेंगे।

प्लास्टिक जीवन को सरल तो बना रहा है, पर बीमार भी कर रहा है

हमें यह संजीदगी से समझना होगा कि प्लास्टिक केवल धरती और समुद्र को प्रदूषित करके जीव जंतुओं के जीवन को ही नष्ट नहीं कर रहा है- ये हमारी ज़िन्दगी के साथ साथ हमारे शरीर के अन्दर तक घुस चुका है। कोई बड़ी बात नहीं कि जो भोजन (शाहकारी हो या मांसाहारी) या पानी हम उपयोग कर रहे हैं, उसमे प्लास्टिक के महीन तत्व नहीं हो !! और ये तत्व हमारी ज़िन्दगी में स्वास्थ्य सम्बन्धी खतरों और खर्चों को आज नहीं तो कल ज़रूर बढ़ाएगा; ये तय है !!

प्लास्टिक बैगों के निर्माण के समय इन्हे आकार देते वक्त जो जहरीले रसायन बनते है, उससे इन्हे बनाने वाले के स्वास्थ्य पर बहुत ही प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। प्लास्टिक बैगों का ज्यादातर उपयोग खाद्य सामग्रियों की पैकिंग में किया जाता है। शोधकर्ताओं का दावा है कि खाद्य सामग्रियो के पैकिंग के समय कुछ जहरीले तत्व इनमें प्रवेश कर जाते है। इस प्रकार से प्लास्टिक बैग इन्हे सुरक्षित रखने के स्थान पर इन्हे प्रदूषित कर देते है। कई घटनाओ में प्लास्टिक द्वारा खाद्य सामग्री को क्षति पहुंचाने की बात सामने आयी है और इस तरह का खाद्य पदार्थो को खा लेने पर फूड प्वॉइजनिंग, आंत सम्बंधित समस्या के अलावा अन्य कई प्रकार की स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो सकती है। इसके अलावा प्लास्टिक द्वारा मनुष्यो को कैंसर होने का भी खतरा रहता है।

क्या हम हमारे कार्य-स्थल को सिंगल-यूज़ प्लास्टिक मुक्त कर सकते हैं?

बिल्कुल कर सकते है। इसके लिए निम्न उपाय अपनाए जा सकते हैं:

- पानी की बोतल को रिफिल करने की व्यवस्था करके;
- सामूहिक भोजन की स्थिति में पैक्ड प्लास्टिक थाली की जगह इकठ्ठा भोजन मंगवाया जाए और परोसा जाए
- कॉफ़ी मशीन या चाय आदि के लिए सिरेमिक का स्टील कप का प्रयोग हो; बजाय के कागज़ या प्लास्टिक के कप। शक्कर मिलाने के लिए भी स्टील चम्मच का उपयोग हो;
- साथी को उपहार दें, तो ऐसे दें कि उन्हें सजावटी प्लास्टिक कवर की बजाय सीधा दिया जा सके। उपहार भी ऐसे हो, जो प्लास्टिक के उपयोग को घटाए;
- जब ऑफिस को सजाने की बारी आये तो एक बार फिर सोचें कि आप किस प्रकार के सजावटी उत्पादों का प्रयोग कर रहे हैं?
- प्लास्टिक का उपयोग कम हो, इसके लिए साथियों से चर्चा करें।

चलते-चलते,

हाल ही के दिनों कई अध्ययनों से यह पता चला है कि वैकल्पिक रूप से उपयोग किये जाने वाले उत्पादों जैसे कागज़ के कप या स्ट्रा आदि की गुणवत्ता को अच्छा बनाने के लिए इनमें कुछ रसायन (केमिकल) मिलाये जा रहे है। ये केमिकल इंसानों के लिए बहुत हानिकारक है और तरल पदार्थों के साथ मिलकर शरीर में जा रहे हैं। सो प्लास्टिक को रोकते रोकते कहीं और खुद और प्रकृति का ज्यादा दोहन और नुकसान न कर जाए; सरकारों को इस दिशा में भी सोचना होगा।

(लेख- ओम, अर्बन95 परियोजना टीम सदस्य, उदयपुर)